

विंध्येश्वरी आरती: सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी

पद 1

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी,
कोई तेरा पार न पाया ॥

पद 2

पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले तेरी भेंट चढ़ाया ॥

पद 3

सुवा चोली तेरे अंग विराजे,
केसर तिलक लगाया ॥

पद 4

नंगे पग माँ अकबर आया,
सोने का छत्र चढ़ाया ॥

पद 5

ऊँचे ऊँचे पर्वत भयो देवालय,
नीचे शहर बसाया ॥

पद 6

सतयुग त्रेता द्वापर मध्ये,
कलियुग राज सवाया ॥

पद 7

धूप दीप नैवेद्य आरती,
मोहन भोग लगाया ॥

पद 8

ध्यानू भगत मैया तेरे गुण गावैं,
मनवांछित फल पाया ॥